ईशोपनिषद्

ईशोपनिषद् के १८ मन्त्रों की तुलनात्मक व्याख्या-टीका सहित

सत्यभूषण योगी

एम० ए०, शास्त्री, वेदालंकार

अध्यक्ष संस्कृत-हिन्दी विभाग, सेंट स्टीफन्स कॉलेज, दिल्ली

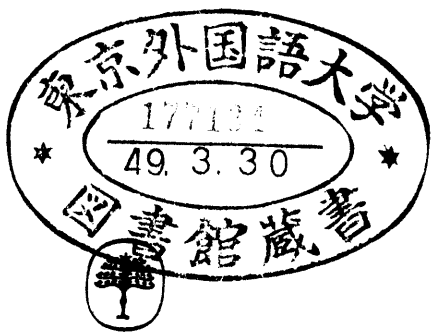

राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली

विषय सूची

समर्पण	३
आमुख	७
भूमिका	१०
मन्त्र	२५
१. ईशावास्यमिदम्	२५
२. कुर्वन्नेवेह कर्माणि	३४
३. असुर्या नाम	४५
४. अनेजदेकम्	५०
५. तदेजति	५५
६. यस्तु सर्वाणि भूतानि	५७
७. यस्मिन् सर्वाणि भूतानि	५९
८. स पर्यगाच्छुक्रम्	६१
९. १०, ११. अन्धं तमः, अन्यदेवाहुः, विद्यां चाविद्यां च	६५
१२. १३, १४.—अन्धं तमः, अन्यदेवाहुः, सम्भूतिं च विनाशं च	७१

१५. हिरण्मयेन पात्रेण ७६
१६. पूषन्नेकर्षे ७९
१७. वायुरनिलममृतमथेदम् ८३
१८. अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् ८६

परिशिष्ट १—व्याकरण ९०
परिशिष्ट २—ईशोपनिषद्-वाक्यानुक्रमणिका ९२
परिशिष्ट ३—ईशोपनिषद् शब्दकोश ९५

आमुख

उपनिषद्-वाङ्मय में ईशोपनिषद् का सर्वातिशायी महत्त्व है। १८ मन्त्रों में सब कुछ कह दिया गया है। ईश्वर-संसार, योग-भोग, परमार्थ-स्वार्थ आदि सबकी विवेचना, विश्लेषण तथा सामंजस्य यहां दृष्टिगोचर होता है।

ईशोपनिषद् चारों वेदों का सार है; सम्पूर्ण उपनिषद् वाङ्मय का मूल है। गीता के १८ अध्याय इन १८ मन्त्रों की विस्तृत व्याख्या हैं। १८ पुराण हैं और महाभारत में १८ पर्व हैं। यजुर्वेद (वाजसनेयि संहिता) का ४०वां (अन्तिम) अध्याय ही ईशोपनिषद् कहलाता है।

इसका पुराना नाम वाजसनेयि-संहितोपनिषद् है। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय तथा ईशोपनिषद् में कहीं-कहीं कुछ पाठभेद हैं।

ईशोपनिषद् में पूर्ण जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है। १८ मन्त्रों में निम्न विचार हैं—

१. ईश्वर[1] सर्वव्यापक है। विशाल ब्रह्माण्ड को उसने थामा हुआ है। छोटे-से इन्सान को थामना उसके लिए क्या कठिन है! मनुष्य संग्रह के लोभ में न पड़े। ईश्वर पर विश्वास रखे। त्यागपूर्वक तथा उससे दिए हुए से भोग करे।

२. ईश्वर-विश्वास का यह तात्पर्य नहीं कि मनुष्य कर्म छोड़कर

१. मनुष्य पक्ष में यह अर्थ है कि शक्तिशाली मनुष्य ही दुनिया में टिक सकता है।